जिप्सी स्कॉलर

से.रा.यात्री

जिप्सी स्कॉलर

(उपन्यास)

मानव प्रकाशन

131, चित्तरंजन एवेन्यू, कोलकाता-700 073,
फोन नं. : (033) 2268-4822, 09831581479
ई-मेल : prakashanmanav@yahoo.co.in

जिप्सी स्कॉलर

से. रा. यात्री

भारत विद्या इंटरनेशनल
कोलकाता

ISBN :**978-81-910021-4-0**

मूल्य :**-250/-**

© से.रा.यात्री

प्रथम संस्करण : 2010

प्रकाशक :
भारत विद्या इंटरनेशनल
131, चित्तरंजन एवेन्यू,
कोलकाता 700 073

एक मात्र वितरक :
मानव प्रकाशन
131, चित्तरंजन एवेन्यू,
कोलकाता 700 073
टेलीफैक्स 033-22684822
इमेल-prakashanmanav@yahoo.co.in

आवरण
कुमार संतोष
मुद्रक :
मानव स्टूडियो, कोलकाता -700 073

प्रिय बंधु
डॉ. सूरज पालीवाल
और
शोभा सलोनी
को सस्नेह

(1)

इन्द्रदेव लायन्स क्लब के सेक्रेटरी थे। उन्होंने अभी तक विवाह नहीं किया था इसलिए नगर में कोई आवास किराए पर लेकर रहने की बजाए उन्होंने क्लब के एक खाली भाग में ही रहना शुरू कर दिया था। क्लब के पास नगर के बाहर अच्छा बड़ा भवन था और सम्भ्रांत समाज के बहुत से लोग क्लब के सदस्य थे इसलिए वहां हर शाम को अच्छी रौनक रहती थी।

लॉन बड़े लम्बे चौड़े थे, शानदार टेनिस कोर्ट था और शाम के समय अच्छी गहमा-गहमी रहती थी। क्लब के बड़े हॉल में बिलियर्ड के लिए लम्बी चौड़ी मेजें पड़ी हुई थी। रिटायर्ड प्रोफेसर किसी अन्य खेल में दिलचस्पी न लेकर ताश के विभिन्न खेलों में व्यस्त रहते थे।

कॉलेज में इन्द्रदेव जी मेरे प्राध्यापक तो नहीं थे पर मैं खाली पीरियड में उनकी कक्षा में जाकर बैठ जाता था। वे अंग्रेजी साहित्य और भाषा के विद्वान थे और यह बात जान गए थे कि मैं अंग्रेजी साहित्य का बाकायदा विद्यार्थी नहीं हूँ.... सिर्फ शौकिया उनकी कक्षा में जाकर बैठ जाता हूँ।

यह एक सामान्य बात नहीं समझी जाती है कि उच्च कक्षा का कोई विद्यार्थी किसी ऐसे विषय की कक्षा में जाकर बैठे जिसका उसकी परीक्षा से कुछ लेना-देना नहीं है। यह दो ही कारणों से संभव है। एक तो विद्यार्थी की उस विषय में गहरी रुचि हो और दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि उस विषय का अध्यापक अपने विषय का असाधारण विद्वान हो। मेरा आकर्षण अध्यापक के प्रति भी था और विषय के प्रति भी। इन्द्रदेव जी में चूंकि दोनों खूबियाँ थीं इसलिए मैं बराबर उनकी कक्षा में जाकर बैठता रहा।